[श्री वाजपेयी]

में, क्या उसको देखते हुए हमें पहल करना चाहिए चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ में जगह देने की ? मैं समझता हूं कि समय आ गया है कि भारत सरकार संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन को प्रवेश दिलाने के प्रस्ताव को वापस कर दे। अगर दुनिया का कोई भी देश उस सवाल को उठाए तो हम उसका समर्थन कर दें। यदि हम तिब्बत के सवाल को उठाने को तैयार नहीं तो फिर चीन जो कुछ हमारे साथ कर रहा है उसको देखते हुए चीन को संयुक्त राष्ट्र में प्रवेश दिलाने के लिए पहल क्यों करें। आखिर, जैसा मैं ने कहा, चीन से मित्रता का यह अर्थ नहीं है कि वह लातें मारते जाए और हम उनके चरणों को चूमते जाएं। मित्रता आत्म सम्मान के आधार पर हो सकती है। चीन आक्रमणकारी है, चीन हमारी सीमा पर प्रवेश करने आया है। हमारे दरवाजे खटखटा रहे हैं। और प्रधान मंत्री जी कहते हैं हम सीमा के सम्बन्ध में बात करने को तैयार नहीं है। मैं समझता हूं हमें अब चीन के सवाल को उठाना नहीं चाहिए। और मैं इस सदन से अपील करूंगा कि वह मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करे और यह सिद्ध करे कि शायद कुछ अन्तर्राष्ट्रीय कठिनाइयों से भारत सरकार तिब्बत के सवाल को भले ही न उठा सके, मगर भारत की जनता की भावनाएं तिब्बत की जनता के साथ हैं, चीनी जनता के साथ हैं और इसका एक ही रास्ता है कि हम इस प्रस्ताव को स्वीकार करें।

18 hrs.

Mr. Speaker: There is an amendment moved to this motion.

Shri Gohokar: I beg leave to withdraw my amendment.

The Amendment was, by leave, withdrawn.

Mr. Speaker: The question is:

"This House is of opinion that Government should refer the Tibetan issue to the United Nations".

The motion was negatived

18.01 hrs.

RESOLUTION *RE*: SESSION OF LOK SABHA AT HYDERABAD OR BANGALORE

श्री प्रकाश वीर शास्त्री (गुड़गांव): अध्यक्ष महोदय, अभी इस सदन में विश्व की एकता के सम्बन्ध में चर्चा हो रही थी। परन्तु मैं एक वह प्रस्ताव उपस्थित करने जा रहा हूं, जिस में भारत की एकता निहित है। मेरे प्रस्ताव के शब्द ये हैं —

> इस सभा की यह राय है कि लोकसभा का अधिवेशन प्रतिवर्ष दक्षिण भारत में हैदराबाद में अथवा बंगलौर में होना चाहिए।

यह प्रस्ताव न केवल मेरी भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि वह भारतवर्ष के एक बहुत बड़े उस भूभाग की भावनाओं का प्रतिनिधित्व भी करता है, जिस को दक्षिण भारत कह कर पुकारा जाता है। यह मेरा सौभाग्य है कि उत्तर भारत का निवासी होते हुए मैं अपने दक्षिण भारत के भाइयों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए इस प्रस्ताव को इस सदन में उपस्थित कर रहा हूं। दूसरे फिर एक समय ऐसा था कि जिस समय दिल्ली भारतवर्ष के मध्य में मानी जाती थी। वह समय वह था जब कि भारतवर्ष का विभाजन नहीं हुआ था और उस की सीमा ब्रह्मदेश—बर्मा—तक थी। पाकिस्तान भी उस वक्त भारतवर्ष में सम्मिलित था। लेकिन आज बर्मा भारत से पृथक हो गया है और पाकिस्तान बनने के बाद भारत के उत्तर का एक बहुत बड़ा भाग भी हम से पृथक हो गया है। इसलिए अब इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता है कि दिल्ली

भारतवर्ष के मध्य में है। तीसरे फिर ऐसी विषम परिस्थितियों में जब कि हमारी सीमा पर शत्रु ने हम को ललकारना आरम्भ कर दिया है, जिस की चर्चा अभी इस सदन में की गई है, बुद्धिमत्ता इसी में है कि हम निश्चय करें कि आगे के लिए हम अपने देश की राजधानी . . . . . .

Mr. Speaker: It is past 6 o'clock. The hon. Member may continue his speech on the next day.

18.03 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, the September 7, 1959/Bhadra 16, 1881 (Saka).